Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

1. The candidate can prepare any 2 (1 speech + 1 Poetry) out of following material to perform in the skill test.
2. Out of the mentioned films list below, the candidate can choose and prepare any one film for discussion.
3. The candidate performs previous work as mentioned above.

For Male candidate

Speech-1

काले सूट वालाः

मैं वास्तव में कौन हूँ? – यह एक ऐसा सवाल है जिसका सामना करना इधर आकर मैंने छोड़ दिया है। जो मैं इस मंच पर हूँ, वह यहाँ से बाहर नहीं हूँ, और जो बाहर हूँ..... खर, इसमें आपकी क्या दिलचस्पी हो सकती है कि मैं यहाँ से बाहर क्या हूँ? शायद अपने बारे में इतना कह देना ही काफी है कि सड़क के फुटपाथ पर चढ़ते आप अचानक जिस आदमी से टकरा जाते हैं, वह आदमी मैं हूँ। आप सिफ घूम कर मुझ देख लेते हैं– इसके अलावा मुझसे कोई मतलब नहीं रखते कि मैं कहाँ रहता हूँ, क्या काम करता हूँ, किस से मिलता रहता हूँ, और किन–किन परिस्थितियों में जीता हूँ। आप मतलब नहीं रखते क्योंकि मैं भी आपसे मतलब नहीं रखता, और टकराने के क्षण में आप मेरे लिए वही होते हैं जो मैं आपके लिए होता हूँ। इसलिए जहाँ इस समय मैं खड़ा हूँ, वहाँ मेरी जगह आप भी हो सकते थे। – दो टकराने वाल व्यक्ति होने के नाते आपमें और मुझमें, बहुत बड़ी समानता है। यही समानता आपमें और उसमें, उसमें और उस दूसरे में, उस दूसरे में और मुझमें.....बहरहाल इस गणित की पहेली में कुछ नहीं रखा है। बात इतनी ही है कि विभाजित होकर मैं किसी–न किसी अंश में आप में से हर–एक व्यक्ति हूँ और यही कारण है कि नाटक के बाहर हो या अन्दर, मेरी कोई भी एक निश्चित भूमिका नहीं है।

नाटकः आधे–अधूरे

लेखकः मोहन राकेश

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

For Male candidate

Speech-2

बिकाश रायः कैप्टन कपूर ने ठीक कहा। बिल्कुल ठीक कहा कि मेरा बड़ा भाई नक्सलवादी था। पुलिस के हाथों मुठभेड़ में मारा गया। वह बहुत बड़े और बहुत सच्चे सपने देखता था। और जो लोग सच्चे सपनों को साकार करने की कोशिश करते हैं, वे कभी भी अपनी मौत नहीं मरते। उनकी मृत्यु हमेशा दूसरों के हाथों होती है। और यह भी सच है कि मरा बड़ा भाई न्याय की जो लड़ाई बंदूक से लड़ रहा था, वही लड़ाई मैं कानून की ताकत से लड़ रहा हूँ। हमारे वंश में लोगों को न्याय–युद्ध की आदत पड़ चुकी है, सैंकड़ों सालों से। शायद कैप्टन कपूर को यह नहीं मालूम कि अगर मेरा बड़ा भाई नक्सलाइट था तो मेरे पिता आजकल कलकत्ता हाईकोर्ट में जज हैं (धीरे से चलता हुआ कैप्टन कपूर के सामने रूकता है) और कैप्टन कपूर! आपने किसी बहुत बड़े राष्ट्रीय रहस्य का उद्घाटन नहीं किया। सेना में भर्ती होने से पहले पुलिसवाले पूछताछ करते हैं, परिवार के बारें में, चरित्र के बारे में। यह बात न सिर्फ पुलिस को पता है, भारत सरकार को भी पता है। (हँसकर) फिर भी मुझे सेना में रख लिया। और आप जैसे अफसर के विरूद्ध केस लड़ने के लिए भेज दिया। शायद इसीलिए आप नाराज हैं मुझसे।

नाटकः–कोर्टमार्शल
लेखक– स्वदेश दीपक

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

For Male candidate

Speech-3

पिताजी कुछ–कुछ अंधेरे छोटे–से कमरे के फर्श पर खिड़की के नीचे लेटे हुए थे... सफेद वस्त्र पहने और बहुत ही लम्बे–से प्रतीत होते हुए तथा उनके नंगे पैरों की उंगलियां बड़े अटपटे ढंग से फैली हुई थीं। दोनों प्यारे हाथ छाती पर बंधे हुए थे, निश्चल थे। उनकी भी उंगलियां विकृत थीं। सदा हंसती आंखों पर तांबे के सिक्के रखे हुए थे, दयालु मुखड़ा विवर्ण था और दांत दिखाई दे रहे थे, जिनसे मुझे डर लग रहा था।

लाल घाघरा पहने अधनंगी मां उनकी बगल में घुटनों के बल बैठी हुई काली कंघी से उनके लम्बे मुलायम केशों को संवार रही थी। यह वही कंघी थी, जिससे मैं तरबूज के छिलके काटा करता था। उसका गला बैठ गया था। मां भारी और खरखरी आवाज में लगातार कुछ कहती जा रही थीं, उसकी भूरी आंखें सूजी हुई थीं और आंसुओं की मोटी–मोटी बूंदें गिराती हुई मानो पिघली जा रही थी।

लघु उपन्यासः मेरा बचपन

लेखकः मैक्सिम गोर्की

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

For Female candidate

Speech-1

गान्धारीः लेकिन अन्धी नहीं थी मैं।
मैंने यह बाहर का वस्तु–जगत् अच्छी तरह जाना था
धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब है केवल आडम्बर मात्र,
मैंने यह बार–बार देखा था।
निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा
व्यर्थ सिद्ध होते आये हैं सदा
हम सब के मन में कहीं एक अन्ध गह्वर है।
बर्बर पशु अन्धा पशु वास वहीं करता है,
स्वामी जो हमारे विवेक का,
नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण
यह सब हैं अन्धी प्रवृतियों की पोशाकें
जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं
मुझको इस झूठे आडम्बर से नफरत थी
इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी।

नाटकः अन्धा युग

लेखकः धर्मवीर भारती

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

For Female candidate

Speech-2

मल्लिका:
माँ आज के वे क्षण मैं कभी नहीं भूल सकती। सौन्दर्य का ऐसा साक्षात्कार मैंने कभी नहीं किया। जैसे वह सौन्दर्य अस्पृश्य होते हुए भी मांसल हो। मैं उसे छू सकती थी, देख सकती थी, पी सकती थी। तभी मुझे अनुभव हुआ कि वह क्या है जो भावना को कविता का रूप देता है! मैं जीवन में पहली बार समझ पायी कि क्यों कोई पर्वत–शिखरों को सहलाती मेघ–मालाओं में खो जाता है, क्यों किसी को अपने तन–मन की अपेक्षा आकाश में बनते–मिटते चित्रों का इतना मोह रहता है।..... क्या बात है माँ ? इस तरह चुप क्यों हो ?

For Female candidate

Speech-3

अरकादीना:- (त्रिगोरिन से) मेरे पास बठिए। आज से 10-15 साल पहले यहीं झील के आस पास गीत और संगीत करीब-करीब हर रात सुनाई देते थे। यहां झील के किनारे पर जमींदारों की छ: रियासतें हैं । मुझे खूब याद है- यहां हर वक्त हंसी, शोर, शिकार और रोमांस ही रोमांस होता था

नाटक: आषाढ़ का एक दिन

लेखक: मोहन राकेश

और इन छ: बस्तिओं के इकलौते हीरो और देवता उस जमाने में, हमारे...(डोर्न की तरफ इशारा करती है) हमारे यहां डॉक्टर एवगेनी सीरेगाविच हुआ करते थे। वो अब भी बहुत अच्छे लगते हैं, मगर तब तो जवाब नहीं था उनका! वैसे से अब मुझे अफ़सोस हो रहा है- मैंने बेवजह ही उस बेचारे लड़कों को नाराज कर दिया (ज़ोर से) कोस्त्या, बेटे कोस्त्या!

नाटक- मुरगाबी
नाटककार- एंटोन चेखोव

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

Out of the following choose any one poem for performance and discussion –

-1-

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

जो जीवन की धूल चाट कर बड़ा हुआ है

तूफ़ानों से लड़ा और फिर खड़ा हुआ है

जिसने सोने को खोदा लोहा मोड़ा है

जो रवि के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा

नहीं मरेगा

जो जीवन की आग जला कर आग बना है

फौलादी पंजे फैलाए नाग बना है

थ्जसने शोषण को तोड़ा शासन मोड़ा है

जो युग के रथ का घोड़ा है

वह जन मारे नहीं मरेगा

नहीं मरेगा।

केदारनाथ अग्रवाल

-2-

दरवाजा

मैं एक दरवाजा थी

मुझे जितना पीटा गया

मैं उतना ही खुलती गई।

अंदर आए आने वाले तो देखा -

चल रहा है एक वृहत्चक्र -

चक्की रुकती है तो चरखा चलता है

चरखा रुकता है तो चलती है कैंची-सुई

गरज यह कि चलता ही रहता है

अनवरत कुछ-कुछ !

...और अंत में सब पर चल जाती है झाड़ू

तारे बुहारती हुई

बुहारती हुई पहाड़, वृक्ष, पत्थर -

सृष्टि के सब टूटे-बिखरे कतरे जो

एक टोकरी में जमा करती जाती है

मन की दुछत्ती पर।

-अनामिका

-3-

ठाकुर का कुआँ

चूल्हा मिट्टी का
मिट्टी तालाब की
तालाब ठाकुर का

भूख रोटी की
रोटी बाजरे की
बाजरा खेत का
खेत ठाकुर का

बैल ठाकुर का
हल ठाकुर का
हल की मूठ पर हथेली अपनी
फसल ठाकुर की

कुआँ ठाकुर का
पानी ठाकुर का
खेत-खलिहान ठाकुर के
गली-मुहल्ले ठाकुर के
फिर अपना क्या?
गांव?
शहर?
देश?

- ओमप्रकाश वाल्मीकि

Skill test material, UG Admission-2024-25, Dept. of Acting, FFTV, DLC SUPVA, Rohtak

Out of the following choose and watch any one Film for discussion –

1. **12TH FAIL** Directed by Vidhu Vinod Chopra, 2023 (India)
2. **SAM BAHADUR** Directed by Meghna Gulzar, 2023 (India)
3. **THE LUNCH BOX** Directed by Ritesh Batra, 2013 (India)
4. **LUCY** Directed by Luc Besson, 2014 (France)
5. **THE CIRCUS** Directed by Charlie Chalin, 1928 (United States)